International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 22-12-2022, Accepted: 07-01-2023, Published: 23-01-2023
Volume 5, Issue 1, 2023, Page No. 1-3

स्वातंत्र्योत्तर स्त्री यात्रा साहित्यकारों में 'शिवानी' का योगदान ('यात्रिक' रचना के संदर्भ में)

डॉ. सविता अजित सिंग[1], कांबळे रेश्मा मारूती[2]
[1] प्रोफ़ेसर, अण्णासाहेब मगर महाविद्यालय, पुणे, महाराष्ट्र, भारत
[2] पीएच डी, शोधछात्रा, हिंदी विभाग, सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ, पुणे, महाराष्ट्र, भारत

सारांश
'यात्रिक' (1980) रचना में 'शिवानी' ने मानवीय संबंधों और भावनाओं को अभिव्यक्त किया है। शिवानी ने यात्रासाहित्य के साथ संस्मरण, रेखाचित्र आदि विद्याओं में भी बराबर लेखन किया है। जिससे हर वर्ग और हर रूची के पाठक सहज भाव से विचरण कर सकते है। अपने संपर्क में आए व्यक्तियों को उन्होंने करीब से देखा और उसे कलाकृति बना दिया। जिसके द्वारा अपने परिचय के दायरे में आए विभिन्न लोगों और घटनाओं के बहाने से अपनी संवेदना और अनुभवों को स्वर दिया है। इनका साहित्य हिंदी पाठकों के बीच अत्याधिक लोकप्रिय हुआ है। चाहे उपन्यास हो, कहानियाँ हो या उनके यात्रा वृत्तांत, उसमें प्रकृति का मनोरम, मनभावन चित्रण मिलता है। यहीं उनकी अभिव्यक्ति एवं भाषा का सामर्थ्य है। 'यात्रिक' यह रचना निःसंदेह इन्हीं विशेषता से युक्त है।

मूल शब्दः स्वातंत्र्योत्तर स्त्री, यात्रिक, संस्मरण

यात्रा से मनुष्य जाति का अटूट और गहरा रिश्ता है। मानव का विकास यात्रा से ही जूड़ा है। मनुष्य की मूलभूत क्रियाओं में से एक क्रिया 'यात्रा' ही है। मनुष्य का उत्थान हो या पतन वह यात्रा से ही जूड़ा है। मनुष्य के बौद्धिक विकास में तेजी का कारण भ्रमण ही है, क्योंकि गतिशीलता मनुष्य जाति का प्रमुख धर्म है। ज्ञान के भांडार को आत्मसात करने का यह एक उत्तम साधन है। यात्रा से ही हम विशिष्ट जन जीवन की प्रेरणाओं, विश्वासों, आस्था को जानते है। प्रकृति के वैविध्यता का परिचय यात्रा से ही संभव है। माना जाता है यात्रा के बिना न ज्ञान मिलता है, न मुक्ति। इसलिए गतिशीलता जीवन में आवश्यक है। मनुष्य के इतिहास पर दृष्टि डाले तो पाएँगे की जीवनगत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वह सदैव जंगलो, पर्वतो, समुद्रो की यात्रा करता चला आया है।

मनुष्य ने हमेशा अपने भावों, विचारों, कल्पनाओं को प्रकट करना चाहा है। साहित्य इसका प्रभावी माध्यम है। यात्रा वर्णन भी इन्हीं अनुभवों और विचारों को लिपिबद्ध प्रकटीकरण है। यात्रा साहित्य के महत्व को प्रतिपादित करते हुए 'कैलाशचंद्र भाटिया' कहते है, ''यात्रा साहित्य इतने विस्तृत परिवेश को समेटे हुए है कि व्यक्ति के साथ समष्टिगत भाव भी जूड़ जाता है। इस साहित्य में यात्री की संघर्षशीलता व स्वच्छंदता के दर्शन तो है ही साथ ही आकस्मिक रूप से आनेवाली कठिनाईयों से निपटने का साहस भी मिलता है।''[1]

जीवन में यात्रा कितनी आवश्यक, अनिवार्य है यह बताने वाले महानुभूतियों में राहुल सांकृत्यायन का नाम विशेष है। उनके अनुसार घुमक्कडी धर्म सार्वदेशिक विश्वव्यापी धर्म है। इस पंथ में किसी को आने की मनाही नही है। चाहे वह पुरुष हो या स्त्री। इसलिए देश की तरूणियां भी घुमककडी बनने की इच्छा रखे तो यह खुशी की बात है। स्त्री है इसलिए उसमें साहस नहीं है, अज्ञात दिशाओं और देश में विचरने का अनुभव नहीं है ऐसी बात नहीं है। जहां स्त्रियों को दासता में जकड़ा नहीं गया वहां की स्त्रिया साहस यात्रा में भी आगे जा सकती है। राहुलजी के विचार शब्दों में, ''जहाँ तक घुमककडी करने का सवाल है स्त्री का उतना ही अधिकार है जितना पुरुष का। स्त्री क्यों अपने को इतना हीन समझे। पीढ़ी के बाद पीढ़ी आती है, और स्त्री भी पुरुष की तरह ही बदलती रहती है।''[2]

उत्साह और साहस की बात करने पर भी यह भूलने की बात नहीं है कि तरूणी के मार्ग में तरूणों से भी अधिक बाधाये हैं। लेकिन साथ ही आज तक कहीं नहीं देखा गया कि बाधाओं के मारे किसी साहसी ने अपना रास्ता निकालना छोड़ दिया। दूसरे देशों की नारियाँ जिस तरह साहस दिखाने लगी है, उन्हें देखते हुए तरूणी क्यों पीछे रहे?

राहुल सांकृत्यायन और अज्ञेय जी ने जिस प्रकार यात्रा की और साहित्य लिखा वह आज के समय में दुर्लभ है। उस प्रकार की कठोर परिश्रम वाली यात्रा उस समय भी सुलभ नहीं थी और आज भी सहज नहीं है। यातायात की सुविधा, तकनीकी, सुविधा, आदि के कारण यात्रा में सुलभता आई है। आज हिंदी में यात्रा का लेखन करनेवाली कुछ स्त्री यात्रा साहित्यकारों के योगदान के बारे में विवेचन करेंगे। इनमें से कुछ नाम इस प्रकार है– श्रीमती सत्यवती मलिक– कश्मीर की सैर– 1950, श्रीमती विमला कपूर– अजाने देशों में–1955, डॉ. ज्ञानवती दरबार, भारती की झाँकिया–1961, पद्मा 'सूधि'– अलकनंदा के साथ साथ–1965, अमृता प्रीतम– इक्किस पत्तियों का गुलाब–1968, डॉ. कमला सांकृत्यायनल राहुलजी और हिमालय, इंदू जैन– अपने दो वर्षों के जापान–1987, मैत्रेयी देवी–अजान–देश–1988, इंदिरा मिश्र– दो तरह के लोग–1990, मजदा असद–मेरी मारीरास यात्रा–1991, पुष्पा भारती–सफर सुहाने–1994, सुधा मूर्ती–वाईस अँड अंडरवाईस का अनमोल प्रसंग हिंदी अनुवाद है।

स्वातंत्र्योत्तर स्त्री यात्राकारों में 'शिवानी' का नाम भी महत्वपूर्ण है। लेखिका की 'यात्रिक' यह रचना यात्रावृत्त से संबंधित है। वैसे तो हिंदी की पहली स्त्री यात्रा रचना तो नही है पर एक स्त्री द्वारा रचित यात्रा रचना जरूर माना जाएगा। 'शिवानी' के संस्मरण और रेखाचित्र भी महत्वपूर्ण है। उसी क्रम में यात्रागत संस्मरण के रूप में 'यात्रिक' रचना प्रसिद्ध है। इस रचना में 'चरवैति' और 'यात्रिक' रचनाएं सम्मिलित है। 'चरवैति' इस शीर्षक में रूसी मार्क्सवादी विचारधारा के प्रभाव का विवेचन है। यात्रिक में इंग्लैंड एवं पश्चिमी विचारधारा के प्रभाव को रेखांकित है। इस रचना का हिंदी साहित्य जगत् में स्थान एवं व्याप्ति का हम विवेचन करेंगे। लेखिका ने रूस के मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव एवं जीवनशैली पर प्रकाश ड़ाला है। साथ ही पाश्चिमात्य विचारधारा पर भी प्रकाश डाला है। भारतीय संस्कृति और पाश्चिमात्य संकृति पर तुलनात्मक विवेचन किया है। रूसी

विचारधारा और भारतीय विचारधारा में मित्रत्व की भावना की ओर भी लेखिका ने संकेत दिया है। इस रचना का विवेचन विश्लेषण हम विस्तार के साथ करेंगे।

सामाजिक पक्ष

शिवानी का साहित्य मुख्य रूप से युगीन संदर्भ से है। सामाजिक, राजनैतिक घटनाचक्रो से प्रभावित है, सांस्कृतिक जीवन, आर्थिक व्यवस्थाओं से आक्रांत है। रूस में हर क्षेत्र में दिखाई देनेवाला विकास, लेखिका को चकित करता है। सामाजिक समता एवं विषमता के प्रति विद्रोह की भावना को जगह–जग पर लेखिका ने संवेदनशीलता से व्यक्त किया है। सामाजिक समता के बारे में रूस की अवस्था को रेखांकित करते हुए लेखिका कहती है, ''उनके सामाजिक न्याय, तथा सामाजिक नैतिकता का स्तर हमसे कही उँचा है। संभवतः इसका कारण बेकारी का अभाव, सामाजिक समानता, जाती या धर्मगत शत्रू का न होना एवं हथियार न रखने के कठोर नियम''[3]

2. युद्ध की विभिषिका के प्रभाव

बीसवीं सदी के पूर्वार्ध का साहित्य मूलतः आदर्श और यथार्थ के द्वंद्व में मानव मन को टटोलता रहा है। राजनैतिक दावपेंचों ने आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक धरातलों को हिला दिया है। इस संक्रमण ने मानव मन को अकेला बना लिया। तत्कालीन साहित्य मानव मान के आंतरिक सत्यों की पड़ताल के रूप में जीवन संदर्भो की अभिव्यक्ति देने लगा। लेखिका ने भी इसी संवदेना को पकड़ने का प्रयास किया है। इसी कारण प्रो. उमेश शास्त्री कहते है, ''यात्रा वृत्त में कल्पना की अपेक्षा यथार्थ का चित्रण होता है, यात्रा की सृष्टि नहीं होती अपितु भोगे हुए यथार्थ में जिन व्यक्तियों की अभिष्ट छाप रहती हैं, उनका चित्रण स्वतः ही होता है, यात्रावृत्त में यथार्थ का यथावत् चित्रण रहता है।''[4]

रूस यात्रा समय वहाँ के लोगों के रूखे स्वभाव से लेखिका निराश हुई। हँसी, मजाक, हसमेल स्वभाव वहाँ नहीं मिलेगा। इस प्रकार की जीवनशैली का मानसिकता का कारण बताते हुए लेखिका कहती है, ''रूस की इस रूसाई ने पहले पहल मुझे भी क्षुब्ध किया, किंतु धीरे धीरे मुझे लगा, यह रूखाई उसकी स्वभावगत विशेषता बन गई। जिस देश ने एक ही शताब्दि में युद्ध के दो दो विभिषिकाओं को झेला है और धीरे–धीरे अपनी कर्मठता साहस और धैर्य से खोए वैभव को पाया है, उस देश की प्रकृति स्वयं––––बता देती है।''[5]

कानून एवं शासन व्यवस्था

बदलते जीवनमूल्य, परिवर्तन में अनेक प्रश्न खडे किये है। ये सवाल अपना अस्तित्व ढूँढते है। अपना हल खोजते हुए मानव एवं समाज व्यवस्था का अन्वेषण करते हैं और देश काल के साथ अभिव्यक्त होते हैं। रूस की कानून व्यवस्था, शासन व्यवस्था पर नजर डाली हे। यहाँ विषमता नजर नहीं आती। लेखिका के शब्दों में ''रूस एकदम अपराध मुक्त भले ही न हो, अपराध यहाँ बहुत कम होते है, शायद इसलिए कि यहाँ कि दंड–व्यवस्था सबके लिए एक–सी है। हमारे देश की भाँति यह नही कि मंत्रीपुत्र ने कार भिड़ा दी, तो एक ही उँची सिफारिश ने उसे मुक्त करा दिया। या बिना टिकट सफर कर रहे किसी उँची पहुँचवाले यात्री ने बेझिझक चेन खींच गाडी रोकली अपने गाँव की सीमा पर उतर गया।''[6] यहाँ लेखिका ने रूस एवं भारतीय कानून व्यवस्था का तुलनात्मक संकेत दिया है।

समन्वयात्मक संदेश

'शिवानी' का यात्रा साहित्य उन चीजों को देख लेता है। वे मन के अंतस तक पहुँच जाता है। वर्तमान जीवन की दशा और दिशा और जीवन के तंत्र की पहचान करने लगती है। शिवानी जी अपने समय समाज परिवार और खुद में समन्वयात्मक मार्ग निकालने का प्रयास किया है। इन सबमें नैतिक साक्षात्कार कराने का प्रयास करती है। पाश्चात्य देश और भारत के विविध पक्षों में संबंधित तुलनात्मक विवेचन चिंतन प्रस्तुत किया है। दोनों की संस्कृति के अंतर, भेद को स्पष्ट किया है। दोषों के साथ गुणों पर भी प्रकाश डाला है। लेखिका के शब्दों में, ''इतना हम जानते है कि विभिन्न देशों, या विभिन्न भौगोलिक प्रदेशों में, विभिन्न देशवासियों का सांस्कृतिक अनुभव अलग–अलग होता है। कहीं बौद्धिकता का स्वर प्रखर होता है और कहीं वह भौतिक और सामाजिक दोनों धरा तत्वों पर खरा व्यावहारिक। ऐसे भाग्यशाली देश बहुत कम है, जहाँ वैज्ञानिक एवं उच्चकोटि की नैतिक–सामाजिक प्रगति दोनों का स्तर बहुत उँचा हो।''[7]

मनोरंजनात्मक पक्ष

लेखिका ने अपनी पैनी दृष्टि से भागवत सौंदर्य के साथ–साथ प्राकृतिक सौंदर्य को भी खूबसूरती के साथ उकेरा है। प्राकृतिक महत्ता को स्पष्ट करते हुए लेखक 'हरिमोहन' कहते है, ''साहित्यिक मनोवृत्ति के घुमक्कड को प्रकृति, स्थान, समाज, संस्कृति और इतिहास का अद्भूत आकर्षण अपनी ओर खींचता है। वह इनसे वशीभूत होकर यात्रा पर चल पड़ता है।''[8] लेखिका ने रूस की सबसे बडी झील का सुंदर वर्णन किया हे। लेखिका के शब्दों में, ''संसार के स्वच्छतम बल का 1/5 वाँ भाग अपनी विराट परिधि में समेटे यह निश्चय ही प्रकृति की अनुपम कृति है। जिसने भी इसका 'बेकाल' अर्थात 'समृद्धि' नाम धरा, कोई अतिशयोक्ति नही की।''[9] यहाँ लेखिकाने प्राकृतिक सौंदर्य को बिखेरा है। लेखिका का यह विश्वास है कि उसका और यात्रा का एक गहरा संबद्ध है। उसने जहाँ भी अपनी अनुभूतियाँ अभिव्यक्त की है, वे मर्म को स्पर्श करती है। क्योंकि जिन परिस्थितियों को उन्होंने देखा है, जाना है उन सभी बातों को वह संवेदना और निष्पक्षता के साथ संप्रेषित करती है।

आधुनिक सभ्यता की दिशाहिनता पर व्यंग्य

शिवानी ने अपनी इस रचना में सामाजिक विकृतियों, विडंबनाओं एवं आधुनिक जीवन की विद्रुपताओं पर भाष्य किया है। भौतिक सुखसुविधा एवं चकाचौंध में जीनेवाली मगर अंदर खोखली पीढी पर वक्तव्य करते हुए लेखिका कहती है, ''सबसे विडंबना यह है कि पाश्चात्य जीवन की जिस चकाचौंध से हमारी आँखे वहाँ जाकर चौंधिया जाती है, गहराई में जाकर देखे तो उसका व्यर्थ मायाजाल स्वयंपर उपर तिरने लगेगा।''[10] पाश्चात्य देश, खासकर ब्रिटेन यात्रा के समय लेखिका को आये अनुभव वहाँ के सामाजिक जीवन में असुरक्षा के भय का दर्शन कराती है। शाश्वत मूल्यों की उपेक्षा, भोग–लोलुपता, विलासिता वहाँ के जीवन में कूटकूटकर भरी है। चिंतन स्तरपर लेखिका ने पाठकों को खड़ा करने के लिए बाध्य किया है।

साहित्यिक पक्ष

साहित्यकार केवल साहित्यकार होता है। उसमें कोई लिंगभेद नहीं होता। हिंदी के ऐसे बहुत से साहित्यकार रहे है जिन्होंने अपने लेखन से यात्रा साहित्य का विकास किया है। यात्रा साहित्य के आलोचनात्मक अध्ययन के समय अधिकांशतः पुरूष साहित्य को ही केंद्र में रखा जाता है। जिस कारण उन महत्वपूर्ण स्त्री साहित्यकारों की प्रमुख कृतियों पर हमारा ध्यान नहीं जा पाता जिन्होंने समय–समय पर अपनी लेखनी से यात्रा साहित्य को और समृद्ध किया है। इन स्त्री यात्राकारों ने अपने बलबूते और विश्वास पर ही विश्व भर की यात्रा कर, उस यात्रा को शब्दबद्ध करके हिंदी यात्रा साहित्य में श्री वृद्धि की है।

स्त्री का यात्रा करना हमेशा ही बाधाओं को निमंत्रण देना जैसा माना गया। केवल पुरूष सत्ता ही नहीं अपितु प्रकृति भी हमेशा

स्त्री के प्रति कठोर ही बन कर रही है। परंतु इस बात का सुकून है कि स्त्री ने अपनी उपस्थिति जरूर दर्ज करायी है और यात्रा साहित्य में प्रमुख योगदान दिया है। यह प्रमुख योगदान ही है कि यात्रा साहित्य की सर्वप्रथम मुद्रित कृति एक स्त्री लेखिका की है। यात्रा साहित्य का सर्वप्रथम ग्रंथ जो हमें देखने को मिल सका है वह 'लंदन यात्रा' नाम से है।

स्त्री चेतना का एक बहुत बड़ा उद्धरण है कि आज की स्त्री रसोई, गृहस्थी शादी–बच्चे आदि तक न सिमट देश और विदेश के सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आदि पहलुओं पर अपनी बेबाक राय दे रही है। समाज के विकास में अपनी राय दे रही है।

शिवानी ने इस विधा से निश्चित ही अपना मौखिक योगदान दिया है। डॉ. बी. आर. धापसे शिवानी के यात्रा साहित्य की विशेषता बताते हुए कहते है, ''शिवानी ने इस कृति से एक तरफ अपनी मार्क्सवादी आस्था का परिचय दिया है तो दूसरी तरफ पश्चिमी जीवन शैली के परिप्रेक्ष्य में भारतीय संस्कृति को श्रेष्ठ माना है।''[11]

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि स्त्री यात्रा साहित्यकारों में अभूतपूर्व वृद्धि हो रही है। शिवानी, जैसी लेखिकाओं ने यात्रा विधा में अपनी श्रेष्ठ रचनाओं द्वारा अपना स्थान मजबूत करने का प्रयास किया है। निश्चित ही हिंदी के ज्ञान के भांडार को श्रीवृद्धि करने में एवं समाज का उद्बोधन करने में 'यात्रिक' जैसी रचनाएँ अपना स्थान कायम रखेगी।

संदर्भ सूची

1. कैलाशचंद्र भाटिया– साहित्य में गद्य की नई विधाएँ, पृ.103, तक्षशिला प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली प्र.सं. 1961
2. राहुल सांकृत्यायन– घुमक्कडशास्त्र, पृ. 85, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, प्र.सं. 1949
3. शिवानी–यात्रिक, पृ.17, शिवानी साहित्य प्रकाशन, प्र.सं. 2007, राधाकृष्ण प्रा. लि. 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली 110002
4. प्रो. उमेश शास्त्री, हिंदी साहित्य का निबंधात्मक इतिहास, पृ. 210, भारतीय साहित्य मंदिर–फव्वारा दिल्ली द्वारा प्रकाशित।
5. शिवानी– यात्रिक, पृ.17, शिवानी साहित्य प्रकाशन, प्र सं. 2007
6. शिवानी– यात्रिक, पृ.66, वहीं
7. शिवानी– यात्रिक, पृ.31, वहीं
8. प्रो. हरिमोहन– साहित्यिक विधाएँ पुनर्विचार, पृ.213, वाणी प्रकाशन 21, दरियागंज, नई दिल्ली–110002, प्र. सं. 1997
9. शिवानी– यात्रिक, पृ.51, शिवानी साहित्य प्रकाशन, प्र.सं. 2007
10. शिवानी– यात्रिक, पृ.43, वही
11. डॉ. बी. आर. धापसे, हिंदी यात्रा साहित्य और स्त्री यात्रा साहित्यकार– सूर्यकांत दाणेकर, कीर्ति प्रकाशन, कौशिक प्रिंटस, औरंगाबाद, प्र. सं. 2009